SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-04| June- 2026
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.67

तहसील सगड़ी में भूमि उपयोग प्रतिरूप

जितेन्द्र यादव[1], डॉ. शिव शंकर[2]
शोध छात्र श्री गांधी पी.जी. कालेज, मालटारी, आजमगढ़
असि. प्रोफेसर, भूगोल विभाग, हण्डिया पी.जी. कालेज, हण्डिया, प्रयागराज, उ.प्र.

सारांश

भूमि से ही मानव की अधिकांश मूलभूत आवश्यकताएँ प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से पूरी होती हैं। किसी क्षेत्र विशेष के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास में भूमि का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान होता है। मृदा धरातल की ऊपरी सतह का आवरण है, जिसमें वनस्पतियों के जीवन के लिए महत्वपूर्ण खनिज लवण रासायनिक तथा पौष्टिक पदार्थ रहते हैं। भूमि की इस पतली परत से ही मानव जनसंख्या और अन्य सजीवों के भोजन की उपलब्धता सुनिश्चित होती है। संसाधन के रूप में भूमि से बढ़कर कोई वस्तु जीव समुदाय के लिए नहीं है। भूमि संसाधन के अभाव में किसी भी अन्य प्राकृतिक संसाधन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। प्रत्येक दृष्टिकोण से अवलोकन करने पर यह महसूस होता है कि मनुष्य ही नहीं बल्कि प्रत्येक वस्तु भी मृदा की संतान है। मृदा को ही प्राकृतिक वातावरण का प्रमुख तत्व कहा गया है, मिट्टी धरातल की मृत धूल को जीवन के सातत्य से जोड़ती है।[1] यह धरातल के बाह्य आवरण का ऐसा पदार्थ है, जो दृढ़ीभूत नहीं हुआ है, और इसमें पूरे जीव समुदाय के जीवन के अनुपोषण की क्षमता होती है।

मुख्य बिन्दु-भूमि उपयोग, भूमि उपयोग प्रतिरूप, कृषि भूमि उपयोग, भूमि सर्वेक्षण।

प्रस्तावना

किसी भी क्षेत्र के विकास के लिए वहाँ की धरातलीय पृष्ठभूमि का अतुलनीय योगदान होता है। यह प्रकृति-प्रदत्त है और अति प्राचीनकाल से ही यह प्राकृतिक संसाधन मानव सभ्यता के विकास की आधारशिला रही है। इसको स्पष्ट करते हुए विलकाक्स ने लिखा है कि ''मानव सभ्यता का इतिहास मृदा का इतिहास है, और प्रत्येक व्यक्ति की शिक्षा मिट्टी से प्रारम्भ होती है।''

वाडिया ने लिखा है कि ''मानव उपयोग की दृष्टि से सभी देशों की मिट्टियाँ वहाँ के आवरण प्रस्तर का सबसे मूल्यवान अंग हैं, और उनकी सबसे बड़ी प्राकृतिक सम्पत्ति है।'' भूमि संसाधन का बहुत बड़ा भौगोलिक महत्व है, क्योंकि मानव इसी पर निवास करता है। मानव मृदा का विदोहन कर कृषि कार्य करता है, और अन्य उत्पाद पैदा करता है, भूमि मानव की कार्यस्थली है और इस पर होने वाली सम्पूर्ण दृश्य एवं अदृश्य घटनाओं पर उसकी आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक क्रियाओं का प्रभाव पड़ता है। इसी भूमि पर मनुष्य द्वारा निर्मित सांस्कृतिक भू-दृश्य विशाल भवन, नगर-बस्तियाँ, कल-कारखाने, नहरें आदि मानव सभ्यता के द्योतक होते हैं।

अध्ययन क्षेत्र के विकास में भूमि संसाधन का विशेष महत्व है। यहाँ का भू-भाग प्राचीनकाल से ही गहन कृषि के योग्य रहा है। यहाँ का धरातल समतल और कृषि योग्य होने के कारण यहाँ की भारी जनसंख्या जीवकोपार्जन के लिए प्रत्यक्ष रूप से कृषि पर

निर्भर है, लगभग दस हजार वर्ष पूर्व प्राकृतिक दशाओं के परिवर्तन के साथ ही यहाँ मानव ने कृषि करना सीख लिया था। प्रो. सौर का कथन है कि ''प्रारम्भिक कृषि कार्य करने वाले सम्भवतः प्रगतिशील मछुआरे थे, जो ताज़ा जल क्षेत्रों के सहारे मृदु जलवायु वाले क्षेत्रों में रहते थे।''

दक्षिणी-पूर्वी एशिया प्राचीन कृषि का पालना कहलाता है। यहीं पर मानव ने सर्वप्रथम कुत्ता व सुअर को पालना प्रारम्भ किया, और यहीं उसने बीजों से फसलें पैदा करना सीखा।[2]

यहीं से धीरे-धीरे लोगों को भूमि की उपयोगिता का ज्ञान होता गया। उनके भूमि उपयोग के तरीकों में भिन्नता आती गई। भूमि उपयोग शाब्दिक अर्थ में भूमि संसाधन के उपयोग का परिवर्तनशील प्रतिरूप अनेक कारकों के प्रभाव के परिणामस्वरूप एक प्रक्रिया द्वारा निर्मित होता है। इस अर्थ में मानवीय प्रभावों से परिपूर्ण भूमि क्षेत्रों के लिए भूमि उपयोग शब्द व्यवहार में लाया गया है। भूमि उपयोग मृदा प्रयोग की शोषण प्रक्रिया है। मृदा प्रयोग अल्प अवधि का होता है, जबकि मृदा उपयोग या भूमि उपयोग मानव की आवश्यकताओं के अनुरूप अपनाई गई एक लम्बी अवधि है। प्रयोग शब्द संरक्षण के संदर्भ में तथा उपयोग शुद्ध व्यवहारिक संदर्भ में प्रयुक्त होता है। आज बुद्धिजीवी मानव अपनी आवश्यकतानुसार भूमि के उचित एवं अनुचित उपयोग का विश्लेषण करता है। मानव अपनी अनेकानेक आवश्यकताओं के अनुसार भूमि का उपयोग करता है। धीरे-धीरे अनेक सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित होकर मृदा क्षेत्र का प्राकृतिक स्वरूप विलुप्त हो जाता है। उसके स्थान पर उस सम्पूर्ण क्षेत्र में केवल सांस्कृतिक स्वरूप ही महत्वपूर्ण रह जाता है।

वैनजेटी के अनुसार[3]

''भूमि उपयोग प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक अपादानों के संयोग का प्रतिफल है।''

वुड का मत है कि[4]-

''भूमि प्रयोग केवल प्राकृतिक भू-दृश्य या वनस्पति आच्छादित भू-दृश्य के संदर्भ में ही नहीं अपितु मानवीय क्रियाओं से उत्पन्न उपयोगी सुधारों के रूप में भी प्रयुक्त होना चाहिए।''

इस प्रकार क्षेत्रीय आधार पर भूमि उपयोग संसाधन के रूप में बदलने की प्रक्रिया अनेक प्रभावी कारकों की क्षेत्रीय विविधता होने के कारण भिन्न-भिन्न प्रकार की होती है। भूमि उपयोग एक क्रियाशील संकल्पना है, जो क्षेत्र की आर्थिक समस्याओं के अनुरूप सम्पन्न होती है। अतः इस प्रकार के भूमि उपयोग के लिए भूमि संसाधन उपयोग शब्द का प्रयोग किया जाता है।

अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग प्रतिरूप का विश्लेषण[5]

'भूमि संसाधन उपयोग' भूमि समस्या एवं योजना सम्बन्धी विवेचना की धुरी है; आर्थिक दृष्टिकोण से भूमि उपयोग का मुख्य सम्बन्ध उस परिस्थिति, प्रतिस्पर्धा, परिवर्तन एवं सामंजस्य से है जिनका प्रादुर्भाव संसाधनों के उपयोग से होता है।

जनसंख्या में तीव्रतर वृद्धि के कारण भौगोलिक, आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों के अनुकूल होने पर जब प्राकृतिक क्षेत्र पर कृषि कार्य मानव द्वारा प्रारम्भ किया जाता है, तब उसी समय से उस प्राकृतिक क्षेत्र का स्वरूप बदलने लगता है और वहाँ भिन्न-भिन्न आर्थिक एवं तकनीकी कारकों के न्यूनतम रूप में प्रभावशाली होने के कारण पहले कृषि व्यवस्था ही स्थानान्तरणशील होती है। परन्तु जब विभिन्न मानवीय एवं भौगोलिक कारकों के अपेक्षाकृत अधिक अनुकूल होने के परिणामस्वरूप कृषित क्षेत्र अकृष्य क्षेत्र की अपेक्षा अधिक हो जाता है, तो उस अवधि में गहन जीवन-निर्वाहक कृषि व्यवस्था विकसित होती है।

कालक्रमानुसार विविध प्रकार के प्रभावी कारक क्षेत्रीय आधार पर अलग-अलग होते हैं। कृषि प्रदेश या देश की भूमि सर्वत्र एक जैसी नहीं होती है, बल्कि प्राकृतिक कारकों से प्रभावित होकर पर्वत, पठार, मैदान आदि रूपों में होती है, इसके साथ-साथ मानवीय कारकों के प्रभाव के कारण इन प्राकृतिक भूखण्डों में परिवर्तन होता रहता है, अतः किसी क्षेत्र के भूमि उपयोग अध्ययन के लिए वहाँ का वर्गीकरण आवश्यक है, क्योंकि इसके माध्यम से वहाँ की भूमि उपयोग सम्भावनाओं का पता लगाया जा सकता है,

जिससे वहाँ की जनसंख्या के संदर्भ में कृषि व अन्य आर्थिक विकास हेतु समुचित नियोजन प्रस्तुत किया जा सके। वास्तव में भूमि वर्गीकरण अति दुष्कर कार्य है। भूमि वर्गीकरण का प्रयास अनेक भूगोलवेत्ताओं व कृषि अर्थशास्त्रियों ने विभिन्न देशों में किया है। सर्वप्रथम 1930 में डडले स्टाम्प के निर्देशन में ब्रिटेन का भूमि उपयोग सर्वेक्षण प्रारम्भ हुआ। अनेक भूगोलवेत्ताओं ने भूमि उपयोग सर्वेक्षण से निकाले गये निष्कर्षों के आधार पर सम्पूर्ण भूमि को निम्न वर्गों में विभाजित किया।[6]

1. कृषि योग्य भूमि।
2. वन के अन्तर्गत भूमि।
3. स्थायी घास एवं घास युक्त दलदल भूमि।
4. झाड़ी वन एवं दलदल युक्त भूमि।
5. गृह एवं सम्बन्धित उद्यानों के अन्तर्गत भूमि।
6. बाग-बगीचों के अन्तर्गत भूमि।
7. कृषि क्षेत्र नर्सरी एवं बाग बगीचों के लिए संस्तुत भूमि।
8. कृषि के लिए अनुपजाऊ भूमि।

अध्ययन क्षेत्र का विवरण-तालिका-1.1

विकास खण्ड	कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल	वन	कृषि बेकार भूमि	परती भूमि	कृषि अयोग्य भूमि	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	चारागाह	उद्यानों वृक्षों एवं झाड़ियों के लिए भूमि	कुल कृषित भूमि
महराजगंज	23418	5	210	2331	276	4795	25	569	15207
हरैया	26352	1	261	2820	480	4722	10	571	17487
बिलरियागंज	21333	12	220	2087	163	2751	61	186	15853
अजमतगढ़	21178	1	229	2182	180	2955	10	386	15235
योग	92281	19		9420	1099	15223	106	1712	63782

भूमि उपयोग का यह एक सामान्य वर्गीकरण है, इससे किसी क्षेत्र विशेष में यह स्पष्ट नहीं होता है कि किस प्रकार की भूमि कृषि-बंजर है या कौन-सी कृषि के लिए पूर्ण रूप से अयोग्य है। इसलिए डडले स्टाम्प महोदय ने जलवायु, मृदा, क्षेत्रीय उच्चावच एवं वनस्पति आदि के आधार पर भूमि को तीन वर्गों में विभाजित किया है-

1. कृषि में प्रयुक्त भूमि।

2. आंशिक रूप से कृषि योग्य भूमि।

3. कृषि के लिए अनुपयुक्त भूमि।

वर्ष 1949 ईसवी की लिस्बन के ''अन्तर्राष्ट्रीय भौगोलिक कॉन्फ्रेंस'' में बालकेन वर्ग ने विश्व भूमि उपयोग सर्वेक्षण को प्रस्तावित करने के लिए यूनेस्को की वित्तीय सहायता से बालकेन वर्ग की अध्यक्षता में पाँच सदस्यीय समिति गठित की गई। बालकेन वर्ग ने विश्व भूमि उपयोग सर्वेक्षण की रूपरेखा प्रस्तुत की।[7]

समिति ने 1952 व 1956 ई0 में भिन्न-भिन्न रूपों में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसके आधार पर भूमि उपयोग सर्वेक्षण की रूपरेखा प्रस्तुत की गई।

1. अधिवास एवं सम्बन्धित अकृष्य भूमि।

2. उद्यानों के अंतर्गत भूमि।

3. बाग बगीचों के अंतर्गत भूमि।

4. कृषित भूमि।

5. स्थायी चारागाह के अन्तर्गत भूमि।

6. अविकसित चारागाह के अन्तर्गत भूमि।

7. वन एवं वृक्षों के अन्तर्गत भूमि।

8. दलदली भूमि।

9. अनुपजाऊ भूमि।

भारत में भी भूमि उपयोग का अध्ययन उपरोक्त वर्गीकरण के आधार पर प्रारम्भ हुआ विभिन्न भारतीय भूगोलवेत्ताओं ने क्षेत्र विशेष के अनुरूप उक्त वर्गीकरण में आवश्यक संशोधन भी किए हैं। तहसील सगड़ी जो मध्य गंगा मैदान में स्थित है, उसके लिए बालकेन वर्ग द्वारा प्रस्तावित भूमि उपयोग वर्गीकरण पूर्णतः लागू नहीं किया जा सकता क्योंकि यह वर्गीकरण अपेक्षाकृत बड़े भू-भागों को ध्यान में रखकर किया गया है, जो प्राकृतिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों की विविधता के सामान्यीकरण पर आधारित है। शोधकर्ता का यह अध्ययन क्षेत्र अपेक्षाकृत एक लघु क्षेत्र है। जहाँ सघन जनसंख्या दीर्घकालीन कृषि कार्य एवं अन्य परिस्थितियों की अनुकूलता के परिणामस्वरूप कृषि क्षेत्र सर्वाधिक है, अतः क्षेत्र के सामान्य भूमि उपयोग विश्लेषण के लिए उत्तर प्रदेश राजस्व परिषद के भू-लेख प्रपत्र संख्या पं0 4 में उल्लेखित भूमि उपयोग के 23 उपविभागों को सामान्य भूमि उपयोग की तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है-

1. कृषि अयोग्य भूमि।

2. कृषि योग्य भूमि।

3. कृषिगत भूमि।

उपरोक्त भूमि उपयोग की तीनों श्रेणियों को तालिका 1.2 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 1.2

सामान्य भूमि विवरण (क्षेत्रफल हेक्टेयर में)

क्रमांक	कृषि भूमि उपयोग की श्रेणी	क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	तहसील के कुल क्षेत्रफल का प्रतिशत

© Shiksha Samvad | Received: 10 June -2026 | Accepted: 15 June - 2026 | Published:20 June - 2026

1.	कृषि अयोग्य भूमि।	16322	17.69
2.	कृषि योग्य भूमि।	12177	13.19
3.	कृषिगत भूमि।	63782	69.12
	सकल योग	92281	100

1. कृषि अयोग्य भूमि-

सामान्य भूमि उपयोग के अन्तर्गत कृषि अयोग्य भूमि का विश्लेषण उस क्षेत्र की भूमि उपयोग की स्थिति, स्तर एवं विकास की सम्भावनाओं को व्यक्त करता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कृषि अयोग्य भूमि का तात्पर्य उस भूमि से है, जिसे वैज्ञानिक अनुसंधानों, नवीन कृषि यंत्रों, सिंचाई के साधनों, अभिनव तकनीकी ज्ञान एवं अन्य सुविधाओं के उपरान्त भी आर्थिक दृष्टि से शुद्ध लाभदायी कृषिगत क्षेत्र के अंतर्गत लाया न जा सके। भूमि उपयोग का यह एक ऐसा महत्वपूर्ण पक्ष है, जिसमें आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक भू-दृश्यावलियों (निवास स्थान, सड़क, रेलवे लाइन, उद्योग, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्थान आदि) का विकास होता है। इसके अतिरिक्त कब्रिस्तान, श्मशान एवं जलाशय को भी उसी वर्ग में सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार की भूमि स्थायी रूप से कृषि कार्य के लिए अनुपलब्ध रहती है अथवा कृषि कार्य के लिए इसका तत्काल उपयोग नहीं किया जा सकता है। प्रायः किसी क्षेत्र विशेष के विकसित भूमि उपयोग प्रतिरूप एवं जनसंख्या में वृद्धि या ह्रास के आधार पर कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि में क्षेत्रीय परिवर्तन होता रहता है।

वितरण प्रतिरूप-

अध्ययनकर्ता शोध क्षेत्र तहसील सगड़ी के संदर्भ में कृषि कार्य हेतु कृषि अयोग्य भूमि का विश्लेषण एवं परिवर्तनशील प्रवृत्ति का अध्ययन करने के लिए वर्ष 2020-21 के आँकड़ों को आधार माना है। इस तहसील में क्षेत्रफल की दृष्टि से हरैया विकास खण्ड पहले स्थान पर, महाराजगंज दूसरे स्थान पर, बिलरियागंज तीसरे स्थान पर एवं अजमतगढ़ चौथे स्थान पर विकास खण्ड है।

भूमि उपयोग का विवरण जिला सांख्यिकीय पत्रिका जनपद आजमगढ़ वर्ष 2020-21 के अनुसार निम्नलिखित तालिका 1.3 प्रस्तुत है।

तालिका-1.3

क्रमांक	विवरण	क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	प्रतिशत
1.	जलाशय के अन्तर्गत भूमि	4726.18	28.95
2.	अधिवास एवं मार्गों के अन्तर्गत भूमि	10064.97	61.67
3.	कब्रिस्तान एवं शमशान के अन्तर्गत भूमि।	259.07	1.59
4.	अन्य कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि।	1271.78	7.79
	सकल योग	16322	100

1 सेमी. = 1000 हेक्टेयर

क्षेत्रफल (हे.) कृषि अयोग्य भूमि-2020-21

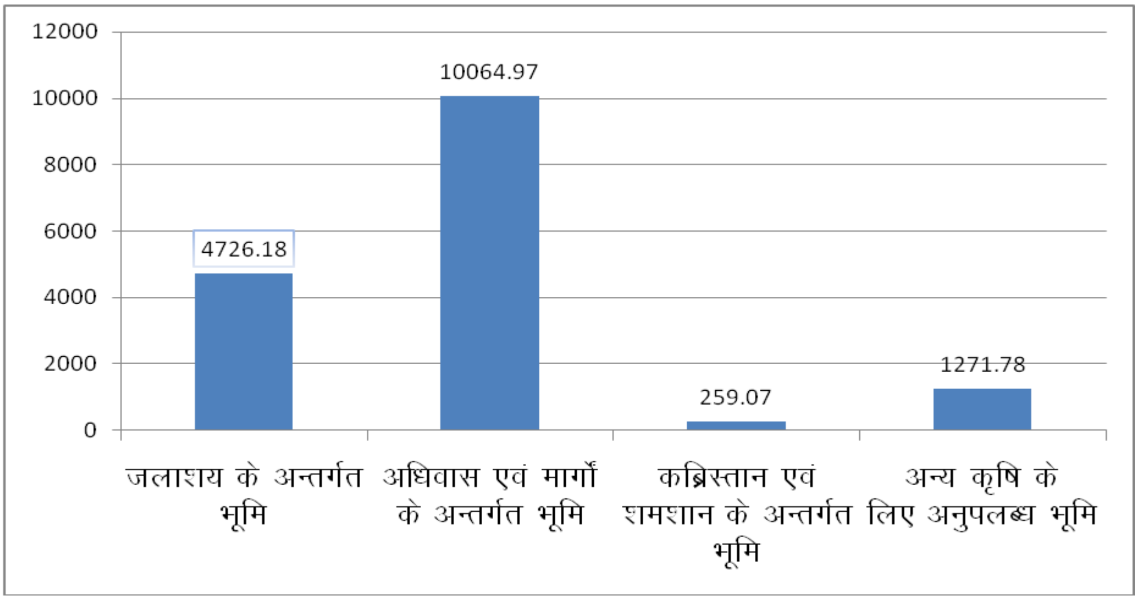

तालिका 1.3 में दर्शाई गई कृषि-अयोग्य भूमि के लिए दो प्रमुख कारक उत्तरदायी हैं-

प्रथम मानवीय कारक-

मानव अधिवास, सड़क, रेलवे लाइन, उद्योग, बाजार, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्थान आदि।

द्वितीय कारक-

जलजमाव युक्त क्षेत्र नदी मार्ग में परिवर्तन से निर्मित छाड़न झील आदि।

2. कृषि योग्य भूमि-

इसके अन्तर्गत भौतिक आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों के परिणामस्वरूप भूमि उपयोग में समयानुकूल परिवर्तन होता रहता है। इस प्रकार किसी भी क्षेत्र में जनसंख्या की आवश्यकता के अनुरूप भूमि उपयोग क्षमता, शस्य गहनता आदि पक्षों में विभिन्न परिस्थितियों के अनुकूल रहने पर वृद्धि की जाती है। दूसरी ओर विभिन्न प्रकार की प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण कृषि के अप्रयुक्त क्षेत्र में भी शस्य उत्पादन में कमी आती है। अतः कृषि योग्य भूमि ऐसी भूमि होती है, जिसमें भूमि उपयोग हेतु अनुकूल परिस्थितियों के अभाव के कारण कृषि कार्य नहीं हो पाता है, परन्तु कृषि की नवीन तकनीक द्वारा इस भूमि को कृषित क्षेत्र में परिवर्तित किया जा सकता है। अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि से कृषि योग्य भूमि का ह्रास हो रहा है, जिसका सर्वाधिक प्रभाव वन पर पड़ा है। मानव ने जंगलों एवं बाग-बगीचों को काटकर कृषि कार्य प्रारम्भ किया, जिस कारण इसके क्षेत्रफल में भारी गिरावट आई। सगड़ी तहसील में कृषि योग्य भूमि के अंतर्गत बाग व झाड़ियाँ, पुरानी परती, नई परती तथा अन्य कृषि बंजर भूमि आदि को सम्मिलित किया गया है।

क्र. सं.	विवरण	क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	कोण अंश	संचयी मान अंश
1.	वन एवं झाड़ियों के अन्तर्गत भूमि	1731	$\frac{1731x360^\circ}{12177} = 51.18$	51.18
2.	अन्य परती भूमि	3614	$\frac{3614x360^\circ}{12177} = 106.84$	158.02
3.	वर्तमान परती भूमि	5806	$\frac{5806x360^\circ}{12177} = 171.66$	329.68

4.	कृषि बेकार भूमि	920	$\frac{920x360°}{12177} = 27.19$	356.87
5.	चारागाह भूमि	106	$\frac{106x360°}{12177} = 3.13$	360.00

कृषि योग्य भूमि 2020-21

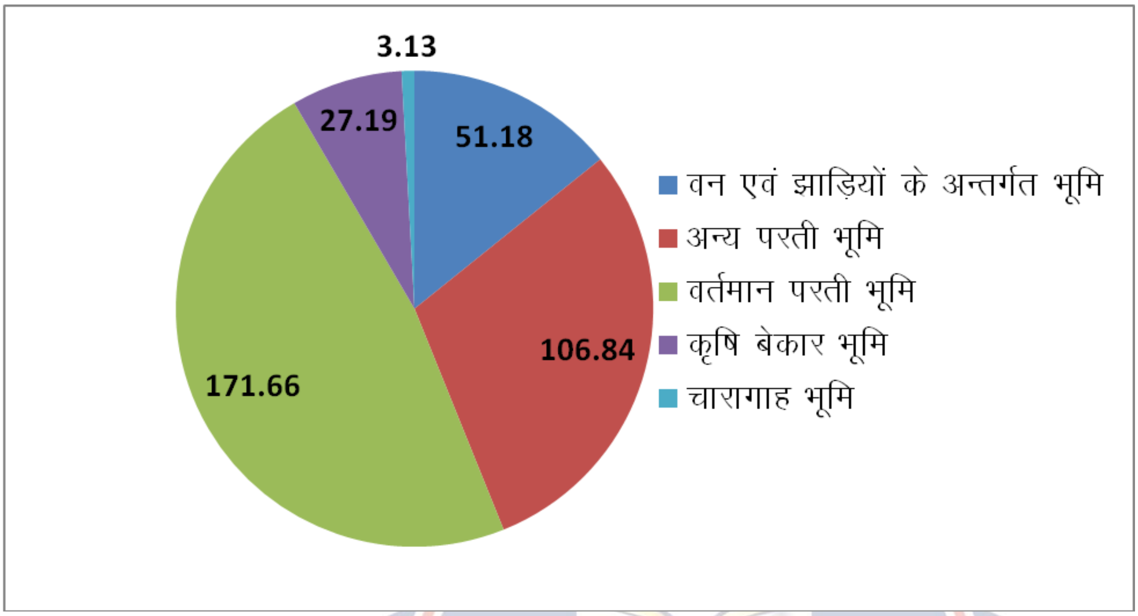

3. कृषिगत भूमि-

भूमि उपयोग के भौगोलिक विश्लेषण में कृषिगत भूमि उपयोग या कृषित भूमि उपयोग सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष है क्योंकि किसी भी कृषि प्रधान क्षेत्र में कृषि से जुड़े हुए अनेकानेक क्रियाकलाप कृषिगत भूमि पर ही आधारित होते हैं। वास्तव में यही कृषित क्षेत्र कृषि संसाधन का मुख्य स्रोत है तथा विभिन्न भौगोलिक सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार कृषि भूमि उपयोग की विविध परिवर्तनशील अवस्थाएँ होती हैं। प्रायः कृषि कार्य प्रारम्भ होने से पहले सम्पूर्ण भू-भाग अकृष्य होता है, और मानव जैसे ही कृषि कार्य प्रारम्भ करता है, वह भूमि आर्थिक संसाधन बन जाती है। जनसंख्या में तीव्र गति से बढ़ोतरी के साथ-साथ मानव का तकनीकी एवं आर्थिक स्तर विकसित होता जाता है। ऐसी परिस्थितियों में कृषिगत क्षेत्रों में क्रमशः वृद्धि होती जाती है।

निष्कर्ष-

परिणामस्वरूप कृषिगत भूमि उपयोग में गहन जीवन-निर्वाह कृषि व्यवस्था विकसित हो जाती है। अतः मानव कृषि से सम्बन्धित सुविधाओं (सिंचाई के साधनों, उन्नतशील बीजों, उर्वरकों, नवीन कृषि पद्धति एवं प्राविधिक ज्ञान) का विकास कर शुद्ध कृषित क्षेत्र के विस्तार हेतु सतत प्रयत्नशील रहा है।

अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि, सिंचाई के साधनों का विकास, उन्नतशील बीजों, उर्वरकों, नवीन कृषि यंत्रों एवं आधुनिक तकनीकों के परिणामस्वरूप शुद्ध कृषित क्षेत्र में निरन्तर वृद्धि की प्रवृत्ति रही है।

अध्ययन क्षेत्र में कृषिगत भूमि का क्षेत्रीय विश्लेषण एवं उस पर आधारित फसल प्रतिरूपों का अध्ययन कृषि कार्य को प्रभावित करने वाले कारकों के परिप्रेक्ष्य में किया गया है। तहसील सगड़ी में जनसंख्या का घनत्व अपेक्षाकृत अधिक होने के कारण क्षेत्र में कृषित क्षेत्र के विस्तार की सम्भावनाएँ बहुत कम हैं।

तालिका-1.5

कृषिगत भूमि का क्षेत्रीय विवरण (क्षेत्रफल हे. में) 2020-21

क्र. सं.	विकास खण्ड	विकास खण्ड का क्षेत्रफल	कृषिगत भूमि का क्षेत्रफल	तहसील सगड़ी के कुल कृषिगत भूमि का प्रतिशत	कोण अंश	संचयी मान अंश
1.	महराजगंज	23418	15207	23.84	$\frac{15207x360^{\circ}}{63782} = 85.83$	85.83
2.	हरैया	26352	17487	27.41	$\frac{17487x360^{\circ}}{63782} = 98.7$	184.53
3.	बिलरियागंज	21333	15853	24.86	$\frac{15853x360^{\circ}}{63782} = 89.48$	274.01
4.	अजमतगढ़	21178	15235	23.89	$\frac{15235x360^{\circ}}{63782} = 85.99$	360
	योग	92281	63782	100	360^{0}	

कृषिगत भूमि 2020-21

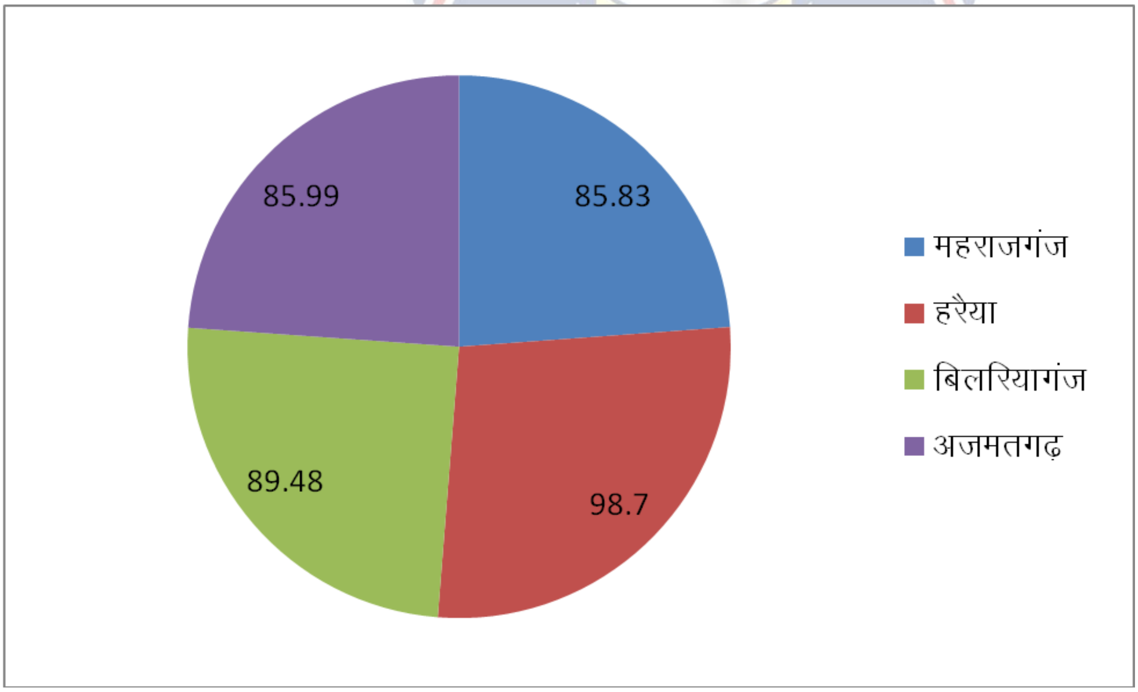

तहसील-सगड़ी, आजमगढ़, उ.प्र.

REFERENCE

1. Cole Gronville: "The Sail Considered as a rock limks......The dead dust of the earth with continuity of life". Quoted lry Arthur Holmes in Physical Geology. 1959. P. 122.
2. एस.के. जैन, ''कृषि भूगोल'' पृष्ठ संख्या-7, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स, जयपुर।

3. Vanzetti, C. (1972), "Land use and Natural Vegetation" in International Geography edited by W. Peter Adam and Frederick, M. Helleiner, Torantu University, pp. 1105-1106.
4. Wood. H.A. (1972), "A Classification of Agricultural land use for Development Planning", International Geoy (22) L.G.V. Canada University of Toronto Press, (P. 1106)
5. Barlowe, R. and Jhnson, V.W. (1954), "Land Problems and Policles", New York, P. 99. Barlowe, R. (1961), Land Resources Economic-The Political Economy of Rural and urban land Resource use New York p. 228
6. Stamp. L.D. (1948), "The Land of Britain : its use and misuse", Landon pp. 351-387
7. Stamp. L.D. (1960), "Applied Geography", Landon p. 105.

Cite the Article:

यादव, जितेन्द्र, शंकर, डॉ. शिव (2026). तहसील सगड़ी में भूमि उपयोग प्रतिरूप. Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, 3(4) 635-643, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 04, June-2026.

DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.67

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

जितेन्द्र यादव[1], डॉ. शिव शंकर[2]

For publication of research paper title

तहसील सगड़ी में भूमि उपयोग प्रतिरूप

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-04, Month June 2026, Impact Factor-RPRI-3.89/6.69

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.67